The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 6 | June 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत–मध्य एशिया के बीच ऐतिहासिक संबंधः रेशम मार्ग के परिप्रेक्ष्य में

दीपक शर्मा
अतिथि व्याख्याता इतिहास विभाग,
विश्वविद्यालय कन्या महाविद्यालय, बिलोता, जिला राजसमंद
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
भारत, मध्य एशियाई देश, ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक संबंध, रेशम मार्ग।

ABSTRACT

भारत और मध्य एशिया के बीच प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। बौद्ध धर्म का प्रचार मध्य एशिया के कई इलाकों में होने के साथ साथ भारत में सल्तनत काल और मुगल काल के दौरान मध्य एशिया की अनेक प्रजातियां भारत आयी और यहीं आकर बस गई। इस प्रकार दोनों पक्षों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान लगातार होते रहे हैं। 19वीं शताब्दी में रुसी नियंत्रण के बाद मध्य एशिया के भारत के साथ संबंध टूट गये थे परंतु वर्तमान में भारत के लिए मध्य एशिया का महत्व केवल ऐतिहासिक कारणों न होकर सामरिक और आर्थिक कारणों से भी है। भारत, सोवियत संघ के पतन के पश्चात् मध्य एशियाई देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए प्रयासरत है। भारत और मध्य एशिया अपने साझा इतिहास और सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। हालांकि भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा मध्य एशिया के किसी भी देश के साथ नहीं मिलती है परंतु भारत इन देशों को अपने विस्तारित पड़ोसी के रूप में देखता है। इन दोनों ही क्षेत्रों द्वारा समाज वैश्विक एवं क्षैत्रीय चुनौतियों का सामना किया जा रहा है जो उनके मध्य पारस्परिक लाभप्रद संबंध स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करती है। प्रस्तुत शोध पत्र की अधिकांश सामग्री द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण एवं वर्णनात्मक दृष्टिकोण का साझा प्रयोग किया गया है तथा शोध सामग्री विभिन्न पुस्तकों एवं लेखों से प्राप्त की गई है। शोध पत्र गुणात्मक पद्धति पर आधारित है।

परिचयः

मध्य एशिया

मध्य एशिया, एशिया महाद्वीप का एक केन्द्रीय भाग है जो यह पूर्व में चीन, पश्चिम में कैस्पियन सागर और उत्तर में रुसी संघ तथा दक्षिण में अफगानिस्तार तक विस्तृत है। वर्तमान में मध्य एशिया क्षेत्र के अंतर्गत पूर्व सोवियत संघ से विघटित पांच देश शामिल है– कजाखस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान प्रमुख हैं। मध्य युग के दौरान इसे तुर्कस्तान या तातारिस्तान के नाम से जाना जाता था क्योंकि यहां की स्थानीय भाषा तुर्क भाषा के काफी करीब है। सांस्कृतिक दृष्टि से इस क्षैत्र पर ईरानी संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगत होता है। हालांकि दूसरी मुख्य आबादी ईस्लाम धर्म के सुन्नी संप्रदाय से संबंधित है।

प्राचीन रेशम मार्ग

ऐतिहासिक काल में मध्य एशिया अपने रेशम मार्ग के लिए जाना जाता था जिसका अपना व्यापारिक और सांस्कृतिक महत्व है। इस मार्ग द्वारा चीन, भारत, ईरान मध्य–पूर्व और यूरोपीय देशों के बीच लोगों, व्यापार, संस्कृति और धर्म तथा साहित्य का आदान–प्रदान होता था। इस दृष्टिकोण से मध्य एशिया की केन्द्रीय स्थिति थी जहां से विभिन्न व्यापारिक कारवां गुजरते थे।

प्राचीन काल में मध्य एशिया में खानाबदोश जातियां निवास करती थी जिसमें स्किथी, बैक्ट्रियाई और सोगदाई लोगों का वर्चस्व था लेकिन धीरे–धीरे इस क्षेत्र में कजाख, उज्बेक, किरगिज, उईगुर जैसी तुर्क जातियां अधिक शक्तिशाली बन गई और इस क्षेत्र पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया।

12वीं सदीं के बाद मध्य एशिया के अधिकांश भाग पर रुस के जार साम्राज्य का शासक स्थापित हो गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जार शासन के पतन के बाद इस क्षैत्र पर सोवियत संघ का अधिकार स्थापित हो गया। मध्य एशिया के सोवियत प्रभाव में आने के बाद यहां अनेकों संख्या में रुसी और यूक्रेनी लोग आकर बस गए जिससे इस क्षेत्र में सांस्कृतिक समन्वय तेजी से हुआ जिससे विभिन्न संस्कृतियों प्रभाव इस क्षेत्र पर पड़ा। सन् 1991 में सोवियत संघ के पतन के बाद 15 स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आये। इनमें मध्य एशिया के पांच देश भी शामिल थे।

भारत–मध्य एशिया को जोड़ने वाले ऐतिहासिक स्थलः

1. प्राचीन सिल्क रुट : प्राचीन सिल्क रुट एक कारोबारी रास्ता होने के साथ साथ भारत और मध्य एशिया के बीच सांस्कृतिक समन्वय का केन्द्र भी था। यह करीब 2000 वर्ष पुराना रुट है जिसके माध्यम से भारत विश्व की अनेक सभ्यताओं से जुड़ा था। इसके इर्द–गिर्द सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक ताना–बाना रहा है जिससे भारतीय व्यापारी और धर्म गुरु हजारों साल से मध्य एशियाई क्षेत्रों में भ्रमण करते रहते हैं।
2. बौद्ध धर्म : पहली सदीं में महात्मा बुद्ध का धर्म मध्य एशियाई क्षैत्रों में फैला था तथा वहां पर बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रसार और इसके अनेक केन्द्र स्थापित हुए। इसके साथ ही धार्मिक साहित्य का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। हालांकि बाद में ईस्लाम धर्म के प्रचार के कारण इसको भारी क्षति पहुंची परंतु आज भी इसका प्रभाव वहां दिखाई देता है।

मध्य एशिया में भारतीय उपनिवेशः

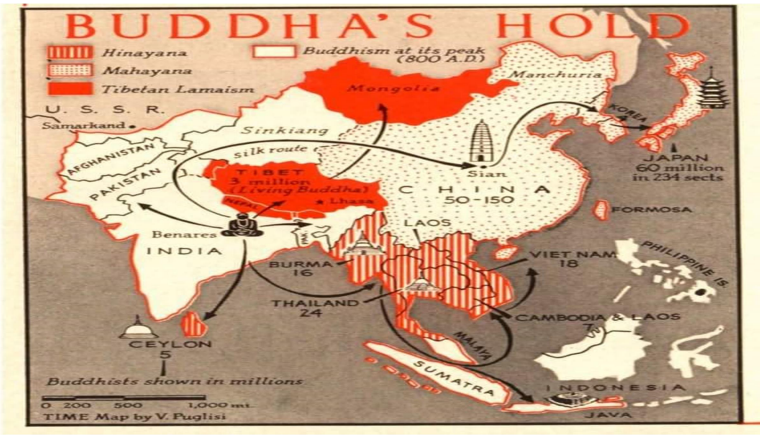

अनेक भारतीय जातियों ने मध्य एशिया में अपने उपनिवेश स्थापित किए जो उनके व्यापार के भी प्रमुख केन्द्र हुआ करते थे, ईस्वी सन् से तीन चार सदीं पूर्व भारतीय आर्यों ने मध्य एशिया में प्रवेश करना शुरु किया और अपने

उपनिवेश स्थापित किए। इन उपनिवेशों में कुछ समृद्ध और शक्तिशाली राज्य बन गए। इससे मध्य एशिया की धर्म और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला और इनके निवासी बौद्ध धर्म के अनुयायी बन गए और और लिखने के लिए भारतीय लिपियों यथा ब्राही और खरोष्ठी का प्रयोग करने लगे। इसके साथ ही उस क्षेत्र में प्राकृत और संस्कृत भाषाओं का भी प्रसार हुआ और वहां की स्थानीय भाषाएं भी भारतीय भाषाओं से प्रभावित हुई। खोतन, चोक्कुक, काशगर और चल्मद में भारतीय लोगों की आबादी काफी अधिक थी। वहां के पुराने निवासियों की तुलना में वहां बसे हुए भारतीयों का राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक महत्व अधिक था। अतः इन क्षेत्रों का भारतीय उपनिवेश कहा जाता था। तत्कालीन कम्बोज और गांधार के साथ भी इन उपनिवेशों का घनिष्ठ व्यापारिक संबंध था। चीनी यात्री फाह्यान ने अपने वृत्तांत में लिखा है कि इन उपनिवेशों के निवासी धर्म और संस्कृति की दृष्टि से भारतीयों के सदृश हैं। भिक्षु लोग संस्कृत पढ़ते हैं और बौद्ध धर्म की भारतीय पुस्तकों का अध्ययन भी करते हैं। मध्य एशिया के इन भारतीय उपनिवेशों में खोतन और कुची प्रधान थे। तकला मकान के दक्षिण में स्थित भारतीय उपनिवेशों में खोतन सबसे शक्तिशाली एवं समृद्ध था और उत्तरी क्षेत्र में कुची नामक राज्य स्थित था। इस प्रकार इन भारतीय उपनिवेशों में स्थित अधिकांश आबादी भारतीय लोगों से समब्द्ध थी। जो कला और संस्कृति के केन्द्र होने के साथ साथ व्यापार के भी प्रमुख क्षेत्र से जहां पर विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों का समन्वय होता था।

मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति का विकासः

वर्षों पूर्व भारत में विश्व के अनेक देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किए थे, जिनमें चीन, मध्य एशिया, पश्चिम, एशिया और रोम प्रमुख थे। इन क्षेत्रों के साथ भारत का व्यापार प्रमुखतः प्राचीन सिल्क रुट के माध्यम से होता था। आगे चलकर इन मार्गों का प्रयोग विभिन्न विद्वानों, भिक्षुओं, आचार्यों और धर्माचायों ने किया और इस माध्यम से विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के मध्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक समन्वय स्थापित हुआ। इसके प्रभाव से भारतीय संस्कृति का प्रभाव मध्य एशिया में भी दृष्टिगोचर हुआ।

रेशम मार्ग प्राचीनकाल और मध्यकाल में ऐतिहासिक व्यापारिक–सांस्कृतिक मार्गों का एक समूह था जिसके माध्यम से एशिया, यूरोप और अफ्रीका जुड़े हुए थे। इसका सबसे जाना–माना हिस्सा पार्थ मार्ग है जो चीन से होकर पश्चिम की ओर पहले मध्य एशिया में और फिर यूरोप में जाता था और जिस से निकलती एक शाखा भारत की ओर जाती थी। रेशम मार्ग का जमीनी हिस्सा 6,500 किमी लम्बा था और इसका नाम चीन के रेशम के नाम पर पड़ा जिसका व्यापार इस मार्ग की मुख्य विशेषता थी। इसके माध्यम मध्य एशिया, यूरोप, भारत और ईरान में चीन के हान राजवंश काल में पहुँचना शुरू हुआ।

झांग क्वियान, एक चीनी अधिकारी और राजनयिक, ने हान राजवंश के दौरान मूल सिल्क रोड की स्थापना की थी। क्वियान को एक राजनयिक मिशन के दौरान अपने पहले अभियान पर गिरफ्तार किया गया और 13 साल तक जेल में रखा गया, उसके बाद वह भाग गया और चीन से मध्य एशिया तक अन्य मार्गों की खोज की। तांग राजवंश के दौरान, 618 और 907 ई. के बीच सिल्क रूट लोकप्रिय था। यात्री कई ज़मीनी और समुद्री रास्तों से अपने गंतव्य तक पहुँचने का विकल्प चुन सकते थे। क्षेत्रीय सीमाओं और राष्ट्रीय नेतृत्व में बदलाव के साथ–साथ, मार्ग भी विकसित हुए।

सिल्क रुट का चीन, भारत, मिस्र, ईरान, अरब और प्राचीन रोम की महान सभ्यताओं के विकास पर गहरा असर पड़ा। इस मार्ग के द्वारा व्यापार के आलावा, ज्ञान, धर्म, संस्कृति, भाषाएँ, विचारधाराएँ, भिक्षु, तीर्थयात्री, सैनिक, घूमन्तू जातियाँ, और बीमारियाँ भी फैलीं। व्यापारिक नज़रिए से चीन रेशम, चाय और चीनी मिटटी के बर्तन भेजता था, भारत मसाले, हाथीदांत, कपड़े, काली मिर्च और कीमती पत्थर भेजता था और रोम से सोना, चांदी, शीशे की वस्तुएँ, शराब, कालीन और गहने आते थे।

हालांकि रेशम मार्ग के नाम से लगता है कि यह एक ही रास्ता था। वास्तव में बहुत कम लोग इसके पूरे विस्तार पर यात्रा करते थे। अधिकतर व्यापारी इसके हिस्सों में एक शहर से दूसरे शहर सामान पहुँचाकर अन्य व्यापारियों को बेच देते थे और इस तरह सामान हाथ बदल–बदलकर हजारों मील दूर तक चला जाता था। शुरू में रेशम मार्ग पर व्यापारी अधिकतर भारतीय और बैक्ट्रियाई थे, फिर सोग़दाई हुए और मध्यकाल में ईरानी और अरब ज़्यादा थे। रेशम मार्ग से समुदायों के मिश्रण भी पैदा हुए, मसलन तारिम द्रोणी में बैक्ट्रियाई, भारतीय और सोग़दाई लोगों के मिश्रण के सुराग मिले हैं।

भारत में रेशम मार्ग स्थलः भारत में रेशम मार्ग स्थल वे स्थल हैं जो प्राचीन रेशम मार्ग पर व्यापार के लिए महत्वपूर्ण थे। भारत में ऐसे 12 स्थल हैं। ये भारत के सात राज्यों में फैले हुए हैंरू बिहार , जम्मू और कश्मीर , महाराष्ट्र , पुडुचेरी , पंजाब , तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश । ये स्थल यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में हैं ।

प्राचीन वैशाली के खंडहर

कोल्हुआ

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा की गई खुदाई में कुठागरशाला , स्वस्तिक आकार का मठ, एक तालाब, मन्नत स्तूपों का एक समूह, लघु मंदिर, मुख्य स्तूप और अशोक स्तंभ के अवशेष मिले हैं। संरचना के मुख्य घटक मौर्य वंश (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) से गुप्त वंश (7वीं शताब्दी ईस्वी) तक के हैं।

यह स्तंभ 11.00 मीटर ऊंचा है और अखंड पॉलिश बलुआ पत्थर से बना है। इस स्तंभ को स्थानीय रूप से लाट कहा जाता है। यह संभवतः सम्राट अशोक महान के सबसे पुराने स्तंभों में से एक है और इस पर सामान्य शिलालेख नहीं है, लेकिन गुप्त काल के शैल चरित्र के कुछ अक्षर स्तंभ पर उत्कीर्ण हैं।

ईंटों से बना स्तूप मुख्य बंदर द्वारा बुद्ध को शहद भेंट करने की घटना की याद में बनाया गया था । इसे मूल रूप से मौर्य काल (323 ईसा पूर्व–232 ईसा पूर्व) में बनाया गया था और बाद में कुषाण काल (पहली–दूसरी शताब्दी ई.) में इसकी ऊंचाई बढ़ाकर और परिक्रमा पथ को पक्का करके इसका विस्तार किया गया। गुप्त और गुप्तोत्तर काल में ईंटों से और अधिक आवरण बनाए गए ।

बगल के तालाब की पहचान मार्केट हार्ड के रूप में की गई है। माना जाता है कि इसे बंदरों ने बुद्ध के लिए खोदा था। ईंटों से बना सात–स्तरीय तालाब लगभग 65 • 35 मीटर का है, जिसके दक्षिणी और पश्चिमी हिस्से में दो स्नान घाट हैं।

कुटागरशाला वह स्थान है जहाँ बुद्ध वैशाली में बरसात के मौसम में रुकते थे। उत्खनन से इसके निर्माण के तीन चरण मिले हैं। मूल रूप से यह शुंग – कुषाण काल (दूसरी–तीसरी शताब्दी ई.) के दौरान निर्मित एक छोटा सा चौत्य था। गुप्त काल के दौरान दूसरे चरण में इसे एक भव्य मंदिर में विस्तारित किया गया था। तीसरे चरण में, गुप्त काल के बाद इसे कई विभाजन दीवारें प्रदान करके मठ में परिवर्तित कर दिया गया था।

दूसरा मठ जो स्वस्तिक जैसा दिखता है, उसमें 12 कमरे हैं, प्रत्येक भुजा पर 3 कमरे हैं जो एक आम बरामदे से जुड़े हैं जो एक खुले केंद्रीय प्रांगण के चारों ओर है। इस मठ का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है और शौचालय कक्ष इसकी दक्षिणी दीवार से जुड़े हैं। इसका निर्माण गुप्त काल में संभवतः भिक्षुणियों के लिए किया गया था।

स्थलों की खुदाई के दौरान प्राप्त अर्द्ध–कीमती पत्थरों की मालाएं, टेराकोटा की मूर्तियां, मुहरें और मुहरें, अर्द्ध–कीमती पत्थरों से जड़ी ईंटें, उत्कीर्णित पॉलिश और भीड़ भरे बंदर की एक अनूठी टेराकोटा आकृति जैसी पुरावशेषों को एएसआई द्वारा संचालित स्थानीय स्थल संग्रहालय में आगंतुकों के लिए प्रदर्शन हेतु रखा गया है।

प्राचीन वैशाली के अवशेष

स्तूप की पहचान आठ स्तूपों में से एक के रूप में की गई है, जिसमें बुद्ध के भौतिक अवशेष हैं। इस स्थल की खुदाई केपी जयसवाल शोध संस्थान द्वारा 1957–58 में की गई थी। मूल रूप से यह मिट्टी का स्तूप था, जो आकार में छोटा था, जिसे लिच्छवियों ने लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में बुद्ध के अवशेषों के ऊपर बनवाया था। अयाकों ने देखा कि दक्षिणी और पूर्वी हिस्से शायद इस तरह के सबसे शुरुआती उदाहरण हैं। स्तूप के केंद्र में एक सोपस्टोन का डिब्बा मिला है, जिसमें राख जैसी मिट्टी, एक छोटा शंख, दो कांच के मोती, सोने की पत्ती का एक छोटा टुकड़ा और एक सिक्के पर अंकित एक चॉपर पंच है। मौर्य, शुंग और कुषाण काल में स्तूप का विस्तार हुआ और स्तूप का व्यास 17.1 मीटर बढ़ा दिया गया।

विक्रमशिला प्राचीन विश्वविद्यालय के अवशेष

खुदाई से एक विशाल चौकोर मठ का पता चला है जिसके केंद्र में एक क्रूसिफ़ॉर्म स्तूप, एक पुस्तकालय भवन और मन्नत स्तूपों का समूह है। मठ के उत्तर में, तिब्बती और हिंदू मंदिर पाए गए हैं। मठ एक विशाल चौकोर संरचना है जिसकी प्रत्येक भुजा 330 मीटर है। मठ के प्रत्येक तरफ 53 कमरों के साथ 208 कमरे हैं। पूरा मठ सौ एकड़ से ज़्यादा में फैला हुआ है। दीवार पर सजावट के लिए ढलाई और टेराकोटा पट्टिकाएँ हैं जो पाल काल (8वीं–12वीं शताब्दी ईस्वी) के दौरान इस क्षेत्र में पनपने वाली टेराकोटा कला की उच्च उत्कृष्ट कला की गवाही देती हैं। पट्टिकाओं पर कई बौद्ध, हिंदू देवी–देवताओं और मानव आकृतियों, जानवरों और पक्षियों को दर्शाया गया है।

कुशीनगर में बौद्ध अवशेष

कुशीनगर में अवशेष तीन स्थानों पर वितरित हैं – मुख्य स्थल, मठ–कुंअर शाइन और श्मशान स्तूप। मुख्य स्थल में मुख्य स्तूप और निर्वाण मंदिर के साथ–साथ आसपास के स्मारक शामिल हैं।

रेशम मार्ग की विरासतः

आज, कई ऐतिहासिक इमारतें और स्मारक अभी भी खड़े हैं, जो कारवांसेरा, बंदरगाहों और शहरों से होकर सिल्क रोड के मार्ग को चिह्नित करते हैं। हालाँकि, इस उल्लेखनीय नेटवर्क की दीर्घकालिक और चल रही विरासत इन मार्गों पर सहस्राब्दियों से विकसित हुई कई अलग–अलग लेकिन परस्पर जुड़ी संस्कृतियों, भाषाओं, रीति–रिवाजों और धर्मों में परिलक्षित होती है। कई अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के व्यापारियों और यात्रियों के आने–जाने से न केवल वाणिज्यिक आदान–प्रदान हुआ, बल्कि सांस्कृतिक संपर्क की एक सतत और व्यापक प्रक्रिया भी शुरू हुई। इस प्रकार, अपने शुरुआती, खोजपूर्ण मूल से, सिल्क रोड यूरेशिया और उससे भी आगे तक विविध समाजों के निर्माण में एक प्रेरक शक्ति बन गए।

भारत और मध्य एशिया के बीच जो सांस्कृतिक आदान–प्रदान हुआ, इसका प्रमाण इन देशों से प्राप्त विभिन्न प्राचीन स्तूपों, मन्दिरों, मठों, मूर्तियों और चित्रों से ज्ञात होता है। मध्य एशिया के साम्राज्यों में कुची एक ऐसा राज्य था जहां भारतीय संस्कृति पूर्ण वैभव पर थी और यह प्राचीन रेशम मार्ग पर स्थित था जिसके जरिए विभिन्न भारतीय और चीन विद्वान अपनी यात्राएं किया करते थे। इस व्यापार मार्ग द्वारा धर्म, दर्शन और साहित्य, कला एवं संस्कृति का प्रचार विभिन्न देशों में हुआ। इसमें खोतान एक महत्वपूर्ण राज्य था जो इसी रेशम मार्ग पर स्थित था। खोतान राज्य से प्राप्त सिक्कों पर एक ओर चीनी भाषा में लिखा हुआ है तो दूसरी और प्रकृति भाषा में खरोष्ठी लिपि का उल्लेख है। यहां रेत में दबे मठों की खुदाई से बड़ी संख्या में संस्कृत भाषा में बौद्ध धर्म की पांडुलिपियां, उनके लिप्यनार और अनुवाद प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार खोतान राज्य भारत और मध्य एशिया की प्राचीन मिश्रित संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है।

कुषाणः भारत में कुषाण वंश के शासक कनिष्क के शासनकाल के दौरान भारत के मध्य एशिया के साथ संबंध अधिक सुदृढ़ हुए। कुषाण साम्राज्य में मध्य एशिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा चीन के कुछ क्षेत्र भी इसमें शामिल थे। इसके शासनकाल के दौरान भारतीय संस्कृति और धर्म का प्रचार मध्य एशियाई देशों तक फैला।

मुगल : भारत और मध्य एशिया के बीच सबसे सुदृढ़ संबंध भारत में मुगल शासन के कारण स्थापित हुए क्योंकि इस साम्राज्य के संस्थापक शासक बाबर का संबंध उज्बेकिस्तान के साथ था और मुगल साम्राज्य ने अपने 250 वर्ष के शासनकाल के दौरान एक मजबूत सांस्कृतिक विरासत के साथ साथ सुदृढ़ प्रशासनिक ढांचा भी स्थापित किया।

सम्राट अशोक की मृत्युपरांत मध्य एशिया की ओर भारतीयों का संक्रमण होने लगा। गान्धार, उद्यान, बामियान, कारगर, खोतन, आदि भारतीयों के प्रमुख केन्द्र थे। समूचे मध्य एशिया में समरकंद तक बौद्ध धर्म फैला हुआ था और इन क्षेत्रों में बौद्ध मूर्तियां, शिव, विष्णु आदि हिन्दू प्रतिमाएं पूजी जाने लगी थी। भारतीय भाषा, लिपि, साहित्य आदि का भी वहां प्रचार हुआ। ऐसे अनेक भारतीय ग्रंथों का वहां पुनरुद्धार हुजा जो भारत में बहुतायत में उपलब्ध थे। मध्य एशिया का सम्पूर्ण क्षेत्र भारतीय संस्कृति से प्रभावित था जो आठवीं और नवीं सदी तक बना हा। उसके बाद वहां ईस्लाम का प्रसार हुआ और भारतीय सभ्यता और संस्कृति की छाप धूमिल होने लगी। इसी प्रकार मध्य एशिया की भारतीय बस्तियों से सीधे भारत के स्थल और जल मार्ग के रास्ते बौद्ध भिक्षु चीन पहुंचे और वहां भी बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

आधुनिक काल में भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद रुस और ब्रिटेन दोनों ने ही इस क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। यद्यपि ब्रिटेन को इस क्षेत्र में अपना प्रभाव स्थापित करने में मदद नहीं मिली लेकिन इस क्षेत्र पर दोनों ही शक्तियों द्वारा अपना प्रभाव जमाने का संघर्ष लंबे समय तक चला। 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में रुस और ब्रिटेन के मध्य इस क्षेत्र में प्रभाव जमाने के लिए जो प्रयास किए गए उसे ग्रेट गैम नाम से जाना जाता है। 19वीं शताब्दी के अंत तक इस समूचे क्षेत्र में घुमंतू जनजातियों का प्रभाव कम हो गया था

तथा यह क्षेत्र चीन और रुस के प्रभाव में आ गया था। अक्टूबर, 1917 की बोल्शेविक क्रांति के बाद इस क्षेत्र को सोवियत संघ में शामिल कर लिया गया। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् यह क्षेत्र पांच देशों में विभक्त हो गया।

निष्कर्ष:

भारत और मध्य एशिया इतिहास और संस्कृति के मामले में बहुत सी समानताएँ साझा करते हैं। दोनों देश सदियों पुरानी सभ्यताओं और अद्वितीय इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध लगभग 2000 साल पुराने हैं। सिल्क रूट, जो व्यापार मार्गों का एक प्राचीन नेटवर्क है, जिसे औपचारिक रूप से हान राजवंश द्वारा स्थापित किया गया था, दोनों देशों के बीच एक कनेक्शन के रूप में कार्य करता था। इसी मार्ग से बौद्ध धर्म भारत से चीन, मध्य एशिया और पूर्वी एशिया में फैला था। ये मार्ग केवल व्यापार मार्ग ही नहीं थे; ये विचारों, नवाचारों, आविष्कारों, खोजों, मिथकों और बहुत कुछ के वाहक थे। इसे वर्तमान में पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है ताकि अपनी सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सत्यकेतु विद्यालंकार. (1980). मध्य एशिया और चीन मे भारतीय संस्कृति. नई दिल्लीः सरस्वती सदन।
2. रे, हरप्रसाद (2019). दक्षिणी रेशम मार्गः एक परिप्रेक्ष्य. नई दिल्लीः रूटलेज।
3. चौधरी, देबाशीष रॉय "चीन और भारत को जोड़ने वाला दक्षिणी रेशम मार्ग संबंधों को बढ़ाने की कुंजी माना जा रहा है।" साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट , 23 अक्टूबर, 2013।
4. "चीन भारत के साथ 'दक्षिणी रेशम मार्ग' को पुनर्जीवित करना चाहता है।" टाइम्स ऑफ इंडिया , 9 जून, 2013।
5. Janos Harmetta.(1994). History of Civilisations of Central Asia. Paris: UNESCO Publishing.
6. Aurel, Stein.(2011). On Ancient Central Asian Tracks. New Delhi: South Asia Books.
7. Philip L. Kohl.(2015). The Bronze Age Civilisation of Central Asia: Recent Soviet Discoveries. New Delhi: Routledge.
8. V. Smith.(1958). Oxford History of India. London: Oxford University Press.
9. D.D. Kosambi.(1965). The Culture and Civilisation of Ancient India: A Historical Outline. London: OUP.

10. Hajime Nakamura.(1987). Indian Buddhism: A Survey with Bibliographical Notes. Delhi: Motilal Banarasidass.

11. P.L.Dash.(ed.,2012). India-Central Asia: Two Decades of Transition. New Delhi: OUP.

12. Surendra Gopal.(ed.,2001). India and Central Asia: Cultural, Economic and Political Links. New Delhi: Shipra Publications.

13. Xinru Liu.(ed.,2012). India and Central Asia: A Reader. New Delhi: Permanent Black.

14. Prabodh Chandra Bagchi.(2nd ed.,1950). India and China: A Thousand Years of Cultural Relations. Bombay: Hind Kitab Ltd.